ISSN 3139-3284 (ONLINE)

VOL. 1

A PEER-REVIEWED · MULTIDISCIPLINARY · MULTILINGUAL JOURNAL

ESTD. 2026

Knowledge Beyond Boundaries...

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

S N A J

Open Access · Online · Biannual · Double-Blind Peer Reviewed
Crossref Indexed DOI · Multidisciplinary · Multilingual

VOLUME 1 · ISSUE 1

JANUARY – JUNE 2026

CHIEF EDITOR

Dr. Mohammad Zahid

www.snaj.org.in

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL

 ISSN 3139-3284 (Online)

SHIBLI NATIONAL ACADEMIC JOURNAL
Volume 1 · Issue 1 · January – June 2026

FOREWORD

It is with immense pride and a deep sense of purpose that I present the inaugural issue of the Shibli National Academic Journal (SNAJ) to the global community of scholars, researchers, and students. Named in reverence to the towering legacy of Allama Shibli Nomani — a scholar whose intellectual contributions transcended boundaries of language, discipline, and geography — this journal aspires to carry forward that same spirit of rigorous, cross-cultural inquiry.

SNAJ was conceived from a simple but pressing conviction: that meaningful scholarship should not be confined by the language in which it is written, nor by the discipline from which it emerges. India's intellectual tradition has long thrived at the confluence of languages — English, Hindi, and Urdu among them — and it is this confluence that our journal seeks to honour. By welcoming original research across the humanities, social sciences, education, and emerging interdisciplinary , multilingual fields, we hope to build a genuinely inclusive platform for academic dialogue.

As Chief Editor, I have had the privilege of witnessing the dedication of our editorial board, reviewers, and contributors, whose collective commitment has shaped this first issue. Every article herein has passed through a rigorous double-blind peer review/ indexed process, and each is assigned a Crossref indexing, registered DOI, reflecting our unwavering commitment to academic integrity, originality, and permanence in the global research ecosystem.

I extend my heartfelt gratitude to our esteemed reviewers, editorial board members, and the scholars who entrusted us with their research. It is through their collective effort that this journal has moved from vision to reality. I also invite researchers, academicians, and students from across disciplines and linguistic traditions to consider SNAJ as a home for their scholarship in the issues to come.

It is my sincere hope that this journal will serve not merely as a repository of research, but as a living, evolving conversation — one that bridges languages, disciplines, and generations of scholars in pursuit of knowledge.

With warm regards,

Dr. Mohammad Zahid
Chief Editor
Shibli National Academic Journal (SNAJ)

Shibli National Academic Journal *ISSN- 3139 - 3284*
Vol. No. 1, Issue No. 1, Jan- Jun 2026
Received Date: 25/02/2026 Accepted Date: 20/05/2026 Publication Date: 30/06/2026. DOI

निर्मल वर्मा : लेखक ,रचना और संप्रेषण का संकट
('शब्द और स्मृति' निबंध के दृष्टिकोण से)

कु0 अंजलि पाण्डेय[1] एवं राजेंद्र सिंह[2]
ORCID ID: 0009-0000-7252-0521

शोध सार:

'शब्द और स्मृति' निर्मल वर्मा का निबंध संग्रह है जिसमें वे सृजन व सृजन के लिए आवश्यक सौंदर्य तथा उसका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव के विषय में चर्चा करते हैं। वे सृजन को शुभ मानते हैं जो सत्यम,शिवम, सुंदरम की ओर ले जाने वाला होता है। 'शब्द और स्मृति' के निबंधों को 'पर्सनल ब्रूडिंग' कह कर वे विश्व की समस्त सृजन भावभूमि से जुड़ते हैं जो भौगोलिक सीमा के परे भी विश्व मानस को जोड़ता है। यह सृजन का सत्य गीता की कर्म प्रधानता से हमें जोड़ता है जहां लेखक स्वयं को अनुभव कर इलियट की निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत के आधार पर सृजन करता है।

बीज शब्द : सौंदर्य, अभिव्यक्ति, लेखक, सृजन प्रक्रिया ,मूल्यांकन , आत्म-मंथन, समाजव्यवस्था, मार्क्सवाद, संप्रेषण, नैतिकता

'शब्द और स्मृति' निबंध में निर्मल वर्मा कला की गहराई को 'अध्यात्म' से तुलना करते हुए अभिव्यक्त करते हैं जहाँ वह संस्कृति के आवरण से निकलकर मनुष्य के चिंतन और समाज को झकझोरती हुई अपना रास्ता बनाती है । वे कहते है ''कला में नई फॉर्म की खोज गहनता के स्तर पर एक नैतिक विवशता से जन्म लेती है, क्योंकि लेखक को हर कदम पर उन सर्वसम्मत मतों से टकराना पड़ता है जो स्वयं उसकी सृजन - यात्रा में रोड़ा बन जाते हैं।[i] शब्द और स्मृति के निबंधों को निर्मल वर्मा 'पर्सनल ब्रूडिंग'कहते हैं । यह पर्सनल ब्रूडिंग 'आत्म' को संवारने की वह प्रक्रिया है जिसमें आप स्वयं अपने भीतर के शत्रु को पहचान उसे कठोरता से काटते जाते हैं ताकि वह शिवत्व की ओर अग्रसर हो सके। वे अपनी यात्राओं के माध्यम से विविध संस्कृतियों का ज्ञानार्जन करते हैं और उन्हें समझते हैं। संस्कृति और सामाजिक परिवर्तनों पर विचार अभिव्यक्त करते हैं तथा कला को संस्कृति या मिथक से उठा कर आध्यात्मिक स्तर पर स्थापित करने का पक्ष रखते हैं।यह उन्नति समाज के लिए जितनी आवश्यक है उतनी ही व्यक्ति के लिए भी है । इसमें व्यक्ति बाहर समाज और संस्कृति में किसी भी भूमिका से पूर्व स्वयं ही रंगक्षेत्र और रणक्षेत्र दोनों होता है।

निर्मल अंधी अनुकरण की प्रवृत्ति और समाज में व्याप्त अंधविश्वासों पर भी प्रहार करते हैं । मार्क्सवाद जैसे आंदोलन जो समाज में असमानता को हटाने हेतु प्रारंभ हुए थे । वे जब धीरे–धीरे केवल लाभ हेतु उपयोग होने लगे तो उनके भीतर भी निहित दोषों पर हुए विद्रोह का वर्णन करते हैं। इसके लिए वे वाल्टर वेण्यमीन,एडोर्नो के मार्क्सवादी दार्शनिक रूढ़िता से बाहर आकर यूरोपीय संस्कृति का पुनर्निरीक्षण करने की चर्चा करते हैं। ''प्राग वसंत और पेरिस में छात्र विद्रोह ने शीतयुद्ध के लगे–बंधे सैद्धांतिक चौखटों को तोड़ कर मानव मुक्ति के नए आयामों को उद्घाटित करने का बीहड़ और गौरवपूर्ण

प्रयास किया"।[ii] "साम्यवादी व्यवस्था की अमानवीय विकृतियों और छलनाओं को भेदने का नैतिक दुस्साहस - सोल्जेनिट्सिन,वात्स्लाव होबल,मिलान कुण्डेश आदि ने किया।[iii]

प्रवास के दौरान हुए विविध अनुभवों की चर्चा करते हुए व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों को आंकते हैं और लौटने की क्रिया को पीड़ादायक मान रहे हैं किन्तु इसी को सार्थक भी मानते हैं अब यह लौटने की क्रिया पीड़ादायक क्यों है? यह सोचने पर मालूम पड़ता है कि वह पीड़ा वहाँ का मोह ना होकर स्वयं के प्रति अधिक जिगीसा है। वे कार्ल क्रॉस का उदाहरण देते हुए कहते हैं "मनुष्य को अंत में वहीं लौटना पड़ता है जहाँ से वह शुरू होता है इसी में उसकी सार्थकता निहित है ।"[v] यह सार्थकता अपने को उत्कृष्ट बनाने से अधिक अपने परितः दिया जाने वाला योगदान है जिसके बिना उऋण नहीं हुआ जा सकता है और जो समाज को उचित दिशा दर्शा सकती है। स्वयं के भीतर आए परिवर्तनों तथा स्वयं का शल्य कर निकला गया अंश लेखन कला को स्वतः ही समाज हेतु लाभकर/हानिकर बनाता है।

लेखन में नैतिकता और सौंदर्य आवश्यक है हालाँकि नैतिकता भी एक प्रकार का सौंदर्य ही है। आचार्य शुक्ल सौंदर्य को व्यक्ति के मानस में मानते हैं और कवि को सौंदर्य प्रकट करने वाला " कवि की दृष्टि तो सौंदर्य की ओर जाती है चाहे वह जहां हो – वस्तुओं के रूप रंग में अथवा मनुष्यों के मन वचन, कर्म में"।[vi] लेखक को समग्र समाज को ध्यान में रख कर लेखनी चलानी पड़ती है। इस नैतिकता के लिए व्यक्ति अनुभव और स्मृति के दो पहियों पर चलता है जिसमें अनुभव लिखते समय तो स्वयं को सामने रखता है वहीं स्मृति सब को जोड़ती चलती है यद्यपि निर्मल अनुभव को महत्वपूर्ण नहीं मानते हैं। "मेरे लिए अनुभव महत्वपूर्ण नहीं है, स्मृति का वह झरोखा है जिसमें गुजरकर वे कहानियाँ बनते हैं ।"[vii]

फ़्लावेयर फ़्रांस का प्रखर यथार्थवादी था तथा उसकी रचनाओं के लिए उसपर मुकदमे तक हो गए । वह शब्द के लिए शब्द ,लेखक की तटस्थता तथा कला को कला के लिए मानता था। जो प्रतीत/अभिव्यक्त है वह उसी को आधार बनाकर रचना को पूर्ण यथार्थपरक अभिव्यक्त करता था किंतु हृदय तल पर वह क़यामत की दन्तकथा में भी विश्वास रखता था। निर्मल इस उदाहरण से अनुभव क्या हैं, 'यह हम तभी जान सकते हैं ,जब हम यह जान लें कि हमें क्या होना चाहिए ,लेकिन हमें क्या होना चाहिए यह तभी जाना जा सकता है जब हमें ज्ञात हो कि हम क्या हैं ।"[viii] निर्वैयक्तिकता के सिद्धांत को महत्व देने वाले इलियट 'स्व' को जानने के पश्चात ही रचना में व्यक्तित्व पलायन की बात रखते हैं। जिससे लेखक अनुभव से समृद्ध हुए मस्तिष्क से केवल एक ओर ही नहीं वरन् चहुं ओर समाज के हित का भी ध्यान रख सके तथा रचना केवल अपनी ही अभिव्यक्ति न रहे।

निर्मल निरंतर उत्थान की ओर ही कला को केंद्रित करते हैं उनके अनुसार "कला की हर महत्वपूर्ण कृति' मनुष्य जैसा है वह स्पष्ट करके 'उसे कैसा होना चाहिए', के दायरे को आलोकित करती है ;लेकिन ज्यों ही हम 'वह क्या है' के केंद्र बिंदु तक पहुँचते हैं, ' कैसा होना चाहिए', यह समझने में समर्थ होने लगते हैं ।"[ix] कला की इस अवस्था तक आने में लेखक को विविध स्तर पर अपनी बाध्यताओं से लड़ना और जूझना पड़ता है यह जूझ ही भीतरी दुनिया को सामान्य जगत की भावनात्मक आवश्यकता से जोड़ती है। उनके अनुसार "निर्णायक ऐतिहासिक क्षणों में लेखक का विश्वास (या आस्था) समकालीन विचारधाराओं और लेखक की भीतरी दुनिया के बीच एक पुल और उनके घात-प्रतिघात का दर्पण दोनों कहा जा सकता है ।"[x] डायरी/आत्मकथा जैसी विधा भी अब चल पड़ी है जो नितांत आपकी अपनी विचारवीथिका हो सकती है लेकिन उपन्यास,कहानी आदि विधाएँ समाज परिप्रेक्ष्य ही लिखी जाती हैं अन्यथा

1. Research Scholar, Pandit Deendayal Upadhyaya Shekhawati University ,Sikar, Rajasthan-332024
Email - ojaswinipandey2002@gmail.com
2. Professor, Pandit Deendayal Upadhyaya Shekhawati University ,Sikar, Rajasthan-332024
Email - Sigarraj@gmail.com

उसका कोई मोल नहीं । हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "मैं साहित्य को मनुष्य की दृष्टि से देखने का पक्षपाती हूँ"।[xi] जिस वाणी की अभिव्यक्ति मनुष्य को दुर्गति, हीनता और अन्य की उपेक्षा से नहीं बचाती, जो आत्मा को तेजोमय नहीं बनाती,जो हृदय को दूसरे के दुःख से दुःखी और संवेदनशील नहीं बनाती, उसे साहित्य कहने में द्विवेदी जी संकोच करते हैं। लेखक अपने से जितना संबद्ध है उतना ही समाज से भी प्रतिबद्ध है।यह प्रतिबद्धता नागार्जुन की प्रतिबद्ध आबद्ध और संबद्ध होने के समान है। निर्मल कहते हैं ''जो लेखक सही अर्थों में प्रतिबद्ध होता है ,प्रतिबद्धता उसके लिए आदर्श का त्याग या 'समाजसेवा' की समस्या ना रहकर अपनी ही सृजन प्रक्रिया की अनिवार्य शर्त बन जाती है।''[xii] आगे वे कहते हैं ''लेखक अपने लिए लिखता है और यह कहना कि वह जुड़ा होकर लिखता है ,इसमें वैचारिक असंगति वही देखते हैं जो सृजन प्रक्रिया को दो मृत और अर्थहीन कठघरों में विभाजित करना चाहते हैं - द्वंद्वात्मक प्रवाह में नहीं देख पाते।''[xiii]इस बात की पुष्टि वे वान गॉग के शब्दों में करते हैं कि उन्हें हमेशा महसूस होता रहा है कि हर चीज की जड़ में सामान्य लोगों की ज़िन्दगी है और वही जड़ ही लेखक को सच्चा लेखक बनाती है।

रचना की अभिव्यक्ति गूंगे के गुड़ के समान होती है जिसे जिस स्तर पर लेखक स्वयं चख सकता है वह उतना ही सर्वस्व नहीं दे सकता तथापि संप्रेषण हेतु वह सर्वसाधारण के लिए भी चुनौती पूर्ण होकर लिखता है ''उन्हीं कला विधाओं की तुलना में साहित्य को एक दुर्गम चुनौती का सामना करना पड़ता है - उसे ऐसे शब्दों के सहारे ,जिन्हें सर्वसाधारण इस्तेमाल करते हैं ,उन अनुभवों को व्यक्त करना पड़ता है जो नितांत प्राइवेट,निजी, वैयक्तिक स्तर पर भोगे गए हैं''।[xiv] यहां लेखक गांधी जी की मान्यता को ही मानता प्रतीत होता है कि रचना इस तरह होनी चाहिए जिसे चरस खींचता व्यक्ति भी समझ सके और पढ़ा लिखा व्यक्ति भी।इस प्रक्रिया में वह अपने औसत अनुभव ,निजी अनुभव वा आनुभविक भूख को अभिव्यक्ति देता है क्योंकि यह अभिव्यक्ति बाहरी हो जाती है। उत्कृष्ट और निकृष्ट अभिव्यक्ति जिसे निर्मल इलीट और वल्गर कहते हैं को भी बाहरी मानते हैं क्योंकि यह आवश्यकता अनुसार लिखा जाता है जिसे लेखक मानक ना मान कर संप्रेषण हेतु अपना पाठक समुदाय तक अपनी बात पहुंचाता है।

मध्ययुग के समय का जिक्र करते हुए वे समाज के प्रतिपल परिवर्तित होते हुए ज्ञान के स्रोत की वर्तमान गति से तुलना करते हैं । मध्ययुग में सभी आपस में सामाजिक तौर पर जुड़े थे और अपनी बात पहुंचाने में आसान थी किंतु आज अलग-अलग अनुभव और स्मृति में यह दुष्कर है क्योंकि अब तथ्यों की भरमार है और समाज विश्व बाजार बन गया है। निर्मल कहते हैं ''मध्ययुगीन समाज में एक व्यक्ति का विज़न चाहे वह भारत में कबीर हों या यूरोप में सेंट फ्रांसिस ऑफ़ असीसी,बिना किसी मास मीडिया के भी ,बहुत शीघ्र समूचे समाज को प्रभावित करता था। संप्रेषणीयता की समस्या उस समाज में नहीं होती जहाँ हर व्यक्ति अपने संस्कारों ,स्मृतियों और विश्वासों में दूसरे व्यक्ति से जुड़ा होता है । वहाँ लोग अपने अनुभवों का साझा करते हैं - उपदेश ,प्रचार ,विज्ञापन द्वारा नहीं बल्कि अचेतन और नैसर्गिक ढंग से ,एक सामूहिक मनीषा के स्तर पर ,जो दरिया की तरह सब अनुभवों को समेट कर चलती है। आज तकनीकी समाज में सामूहिक अनुभव असंभव और दुर्लभ हो गया है''।[xv]

स्वान्त: सुखाय की प्रवृति केवल सीमित लाभ तो दे सकती है किंतु युग परिवर्तन तो तुलसी समान लोकमंगल की भावना के बिना नहीं हो सकता। जिस प्रकार तुलसी ने तात्कालिक समाज के विद्वेष से अध्यात्म की ओर जनता को मोड़ा उसी तरह फ़्लावेयर ने सबसे पहले पश्चिमी समाज की भयानक मशीनी चेतना शून्य प्रवृत्ति को पहचाना और इससे हो सकने वाले आगामी समाज के मानस की पीड़ा को अभिव्यक्ति दी।इस प्रक्रिया में वे 'एक' की ताक़त का वर्णन करते हैं जिसे समाज/पंक्ति कमजोर बना देती है । वे लिखते है ''एक स्वतंत्र मनुष्य को नियंत्रित करना असंभव है ,किंतु उसे भीड़ या जानता का अमूर्त अंग बनाकर आसानी से तोड़ा मरोड़ा जा सकता है''।[xvi] अज्ञेय के शब्दों में ''यह दीप

अकेला स्नेह भरा, है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो''। यह समाज यद्यपि किसी भी भौगोलिक मापक से परे है, यह मानसिक है और समस्त व्यक्ति के लिए समान ही है । मायकोवस्की कहता है ''जहाँ कहीं आँसू गिरते हैं, मैं सूली पर लटक जाता हूँ।'' अर्थात् लेखक का विस्तार सार्वभौमिक है। जो कि सराहनीय और आलोच्य दोनों है।

आलोचना हेतु किसी को स्वयं अपने में इतना विश्वास होना आवश्यक है कि वह यदि किसी का विरोध करता है तो स्वयं के विरोध में भी अपने साथ रह सके। रघुवीर सहाय की राजनीतिक टिप्पणियां और कविताएं हिंदी साहित्य की धरोहर हैं इन्होंने जितना राजनीति की आलोचना की उतनी उनकी भी आलोचना हुई और वे अपनी आलोचना पर अडिग रहे। निर्मल कहते है ''अगर आज रघुवीर सहाय इतनी तीव्र व्यंग्यात्मक ,राजनीतिक कविता लिख सकते हैं तब इसलिए कि स्वयं हिंदी कविता ने पिछले वर्षों में गहरा आत्ममंथन किया है ,अपनी जड़ों और भाषा संस्कारों की सही या ग़लत ,लेकिन निर्भीक , बेख़ौफ़ आलोचना की है । आज की कविता के पीछे आत्म-परीक्षण की सशक्त पीठिका ना होती तो उसका भी वही हश्र होता जो वर्षों पहले प्रगतिवादी कविता का हुआ ।''[xvii]

निर्मल आधुनिक रचना के विषय में कहते हैं ''एक आधुनिक भारतीय लेखक के लिए जोखिम और भी विकट है ।उपन्यास जैसी विधा के लिए उसे एक पश्चिम लेखक की ही तरह आत्मसजग और तर्कशील होना होगा ,किंतु इस विधा की सीमाओं पर उसे एक निर्वैयक्तिक , ग़ैर ऐतिहासिक ,'मिथक सम्पन्न अँधेरी स्मृति को उजागर करना होगा ;उन्हें उजागर करने के लिए ख़ुद अँधेरे में डूबना होगा ।''[xviii] यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आत्मसजगता केवल पश्चिम की ही लेखनी वा लेखकों में ना होकर भारतीय में भी उतनी ही आदि समय से सतत् विद्यमान है। यदि वह ना होती तो कबीर, तुलसी, प्रेमचंद, नागार्जुन , निराला , मुक्तिबोध, रघुवीर सहाय जैसे लेखक इतने सम्मानित ना होते। कबीर, मुक्तिबोध ,निराला ऐसी ही कड़कती लेखनी से लिखते हैं जिसके गीत अभी तक गाये जा रहे हैं।लीलाधर जगूड़ी की रचना 'खबरों का मुँह विज्ञापन से ढका है' नवीनतम रचना ,रचनाकार, समाज के संप्रेषण का उदाहरण है। जो वर्तमान समय की समस्याओं पर बात करती है। 'रचना' संस्कृति से ऊपर अध्यात्म की बात है जो विविध संशयों और दीवारों को ढहाते हुए मुक्ति प्रदान करती है। वह कृष्ण के कथनानुसार ''अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भासते। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिता:''[xix] का पालन करती है वह असोचनीय को ध्यान में रख कर बुद्धिमानों के समान बात नहीं करती है वह तो विगत अशुभ का त्याग करती हुई शुभता और तार्किकता व्याप्त कराती चलती है।

निष्कर्ष :

निर्मल मानते हैं कि रचना कर्म केवल स्वयं की तृप्ति न होकर समाज मंगल हेतु एक उद्यम भी होता है। यह सहज भाषा में समाज के हित के लिए लिखा जाता है। इस सृजन में चुनौती लेखक की होती है क्योंकि वह सदैव नए फार्म की खोज करता रहता है जिससे अपने नैतिक विवशता के कारण उसे सर्वसम्मत मतों से टकराना पड़ता है। लेखन के दौरान उसे रचना के संप्रेषण का ध्यान भी रखना पड़ता है जिससे वह पाठक को समझ आ सके। इन समस्त लेखकीय मानसिक यात्राओं को निर्मल चुनौती मानते हैं साथ ही इसे अध्यात्म में आत्म तत्व की साधना से जोड़ते हैं जिससे समाज का कल्याण हो सके। यही समाज हित ही लेखन और लेखक की सफलता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1.निर्म वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल

2. राम चंद्र शुक्ल, चिंतामणि,निबंध संग्रह ,पहला भाग, कविता क्या है?

3.आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है(निबंध),अशोक के फूल(निबंध संग्रह), सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

4. श्रीमद् भगवद्गीता, दूसरा अध्याय,ग्यारहवां श्लोक, गीताप्रेस,गोरखपुर ग्यारहवां संस्करण

---

[i] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 36

[ii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 12

[iii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 12

[iv] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 12

[v] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 18

[vi] राम चंद्र शुक्ल, चिंतामणि,निबंध संग्रह ,पहला भाग, कविता क्या है? 'सौंदर्य' शीर्षक से

[vii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 23

[viii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 36

[ix] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 36

[x] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 38

[xi] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, मनुष्य ही साहित्य का लक्ष्य है(निबंध),अशोक के फूल(निबंध संग्रह), सस्ता साहित्य मंडल, दिल्ली

[xii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 48

[xiii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 48

[xiv] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 49

[xv] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 53

[xvi] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 55

[xvii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 70

[xviii] निर्मल वर्मा, शब्द और स्मृति,निबंध संग्रह, राजकमल प्रशासन , मई2024,पहला संस्करण, गगन गिल, पृष्ठ 80

[xix] श्रीमद् भगवद्गीता, दूसरा अध्याय,ग्यारहवां श्लोक, गीताप्रेस गोरखपुर ,ग्यारहवां संस्करण

ISSN 3139-3284 (ONLINE)

Knowledge Beyond Boundaries...

ABOUT THE JOURNAL

The Shibli National Academic Journal (SNAJ) is an international, multidisciplinary and multilingual research publication dedicated to advancing rigorous scholarship across the humanities, social sciences, education, language and emerging interdisciplinary fields. Published biannually in fully open access online format, SNAJ upholds a double-blind peer review process to ensure the highest standards of academic integrity, originality and scholarly merit. Every article published in the journal is assigned a Crossref-registered Digital Object Identifier (DOI), ensuring permanent discoverability and citation traceability in the global research ecosystem.

AIMS & SCOPE

SNAJ welcomes original research articles, review papers, case studies and scholarly notes in English, Hindi and Urdu, fostering cross-linguistic and cross-cultural academic dialogue while maintaining internationally recognised standards of research publishing.

ISSN 3139-3284 (Online) · Crossref DOI Indexed

chiefeditor@snaj.org.in

www.snaj.org.in

© SNAJ PUBLICATIONS — ALL RIGHTS RESERVED